***मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में परिवेश चुनौतियां***

***डॉ पूरणमल वर्मा, सह आचार्य,***

***आयुक्तालय कालेज शिक्षा निदेशालय***

***जे एल एन मार्ग जयपुर***

*सारांश*

*हिंदी की प्रसिद् साहित्यकार मैत्रेयी पुष्पा के कथा साहित्य में ग्रामीण एवं शहरी जीवन के परिवेश को विभिन्न संदर्भों में महत्व दिया है।उन्होंने मध्य प्रदेश के बेतवा नदी के‌अंचल बुंदेलखंड क्षेत्र की आदिवासी कबूतरा भील जाती की समस्याओं तथा चुनौतियों से पूर्ण संघर्षशील जीवन जीने वाली नारी की अस्मिता की रक्षा के लिए आवाज उठाई। प्रशासनिक व्यवस्थाओं का खुलासा किया है धर्म की आड़ पर राजनीति करने वाले लोगों को बाहर निकालने के लिए आह्वान किया है। नारी की ग्रामीण एवं शहरी जीवन में स्थिति किस प्रकार से बद से बदतर होती जा रही है उसका जिम्मेदार और कोई नहीं है स्वयं पुरुष के नकारे‌ पन को बताया है। पुरूष चोरी करने तथा महिला दारू बेच कर आजीविका निर्वाह करते हैं।उच्च वर्ग द्वारा किए जाने वाले शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है।अन्य महिला कथाकारों की भांति नारी जीवन से जुड़े हुए तथ्यों को उजागर करने में सक्षम रही है। कस्तूरी कुंडल बसै,चाक,झझूलानट त्रिया हठ,इदननमम,अल्माकबूतरीआदि उपन्यासों के माध्यम से नारी अस्मिता की रक्षा करने वाले तथ्यों को उजागर किया है। गुड़िया भीतर गुड़िया के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी परिवेश का यथार्थ प्रस्तुत किया है। अतः*

*साहित्यकार ने मानवीय संवेदना को विविध रंगों में रंग भरे हैं जो निम्नानुसार प्रस्तुत है।*

*(क ) शहरी जीवन कीअर्थव्यवस्था:- ग्रामीण जीवन की दशा सोचनीय रही है, क्योंकि आदिवास जातियों की महिलाओं की जीवन घर की चार दिवारियों तक सीमित रहगया किन्तु शहरी स्त्रियों की स्थिति “राजगिरि में सोने सी दमकती भोर उगती थी, रंगोंनहाई सांझ, बेतवा की शांत लहरे आसमान छान तले नदी के जल पर बिन नाव के मांझी सातैनात चादें । हजारों उमंगों में भरा पूरा इलाका । लेकिन बेटी परा घर का दरिद्र मानी जाती है। र मुख जोहती ऐसी गइया जिसे किसी भी खूंटे से बाँध दो भोली बढ़िया सी चल देती है। ग्रामीण जीवन भोला-भाला समाज संस्कृति की बहती अविरल धारा में बेक परभावि से जीवन करने वाली जातियों का समूह है किन्तु शहरी संस्कृति में घोड़ा अंतर है। जहाँ गांव की स्त्रियां समाज की मार्यादाओं में रहकर अपना पेट भरती है शहरी स्त्रियों की दिनचर्या कुछ भिन्न है आज के बदलते बैंक स्त्री दूसरी स्त्री की भोषण कर अनैरिक मार्ग द्वारा निजी त्याथ पूर्ति के लिए धनार्जन करवाती है। पुरुष समाज में अपना वर्चस्वचाहता है किन्तु आज नारी शिक्षित होती जा रही है तथा अपने परिवार 10 G 2युग में अ बेतवा बहती रही1. पालन पोषण करने में वही वही हिसा ATC पृ. 14 के आश्रित रहे बिना करती भैत्रेयी ने नारी हुई दिखाई की कमजोरी को दूर करने की प्रयास किया है राजेन्द्र यादवको सम्मममममेका में आध्दीपो भेद शीर्षक से लिखते हुए बताया है 14 महानगरीय मध्यमवर्ग की संघर्ष करती और पोवों के नीचे जमीन की तलाश करती कथा नारियों के बीच गांव की भन्दा एक अजीब निस्कवच निश्छल, संकेल्प दृढ़ नारी का व्यक्तित्व लिकर उभरी बाद के बीच धीरे-धीरे उगले टीले था द्वीप की तरह 14 (कथा प्रसंगे गथा प्रसव राजेनुलेखिका ने चाकठपन्यास के माध्यम से खेरापलिय चंता के माध्यम से प्रस्तुत की है आधुनिक नारी पुरुष नहीं है वह अपने खर्चे स्व निकाल लेती उसका अपनी आरत हो केवल बच्चे पैदा करने वाली मशीन ही नहीं है ‘ तीजन चक्ना चैडन की चलरही की एजी कोई म़थ्यौ है सहर में सोर सिंर बदनामी चडना बेटी ले रही जी “ ‘सुनोमालिक सुनो’ की पृष्ठभूमि में स्वयं मैत्रेयी ने जो वक्तव्य दिया है। वह समय का बदलाव माना “जो नैतिक हमें दी गई है वह आखिर है क्या? यदि वह मर्यादा स्मै जीनें नई देती, विकसित होने में रोड़ा अटकाती है तो यह हमारे काम को जह यदि इससे व्यक्ति की समाज की भलाई होती है तो यह संग्रहय .लेखिका ने शहरी स्त्री द्वारा रहे व्यापार के लिए आर्थिक क्षतिए की अपेक्षा डेठ की क्षतिपूर्ति हमानी है। इसलिए कि वेश्यावृति औरत ही अपनाती है। शरीर बेचकर पैसा कमाती है। अब यह आर्थिक मजबूरी के कारण नहीं क्यों कि अब वह अपनी कीमत हजारों में लगाती है कालगर्ल नामक स्त्री वह सुरसा है, जो जीस टॉप पहनकर स मोबाइल फोन हाथ में रखती है और ‘ शमें धनाढ्य वर्ग को लूखी है। उ बुन्देलखण्ड में विवाह की तया शहरी जीवन की विसंगतियों का परिणाम है। आज की नारी ने पुरुष के अत्याचारों का खुला विरोध कर अपने अधिकार का उपयोग करती दिखाई हँखी भिक्षा, तकनी कि, विज्ञान, चिकित्सा तथा प्रत्येक क्षेत्र में अपनी आजीविका अपनाती जा रही है तथा 11 चाक: पृ०॥ आजकी नारी आर्थिक रूप से सुदृढ़ होती जा रही है 82. सुनोमालिक सुन: आवरण पृष्ठ भूमिका से लेखिका का वक्तव्य 13. सुनोमालिक सुनी:*

*मार शाखी आर्थिक स्थिति में बदलाव (199873569 का अनपढ़ की कहानी ‘झूलानर निश्चय ही हिन्दी का विशिष्ट लघु उपन्यास है। \* भौंथी देश की मुक्ति के लिए स्त्रों को आर्थिक*

*गतिमान) मैत्रेयी पुख्या ने बुन्देलखण्ड अचल के वाशिन्दों को आधार स्त्री विमर्थ व आर्थिक स्थिति को प्रस्तुत किया है, जिसन नमील एवम शहरी दोनों संस्कृतियों की आर्थिक विषमता सेचा जिनगी को उजागर किया है” गांव की साधारण सी औरत शिक्षा एवं स्वावलम्बन को पक्षचरता को दशाली हा लेकिन लोकजीवन की पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था अडवजे डालती ‘कस्तूरी कुण्डल बसै’ उपन्यासहै। में शादी-विवाह की बात स्रो द्वारा चलाई जाए तो मर्यादा के विपरीत समझा जाता है। कस्तूरी को सुनने को मिलता है कि घरके किसी मरद को भेजना। मैत्रेयी नौकरी भी संघर्ष पूर्ण स्थितियों में करती है। ‘इदनमम’ की बह संघर्ष करती हुई गिरस्ती का बोझ अकेले झेलती है महेन्द्र का पाल पोसकर बड़ा करती है। “2 रूप के साथ धन माया होने पर आदमी बौरा जाता है चोक’ उपन्यास में लेखिका ने पर भी कि है कि” औरत, जमीन मालिक के बिना नहीं रहती है 3आज का युग विज्ञान तकनीकी का युग ह तथा नारी की विषमता भरी प्रासद पूर्ण कथा का अंत होता दिखाई दे रहा है। पहले नारी पुरुष के अधीन रहकर त्रासदी भोगवी श्री किससे आज की नारी सकेकरा 12 करतूरी कुमुल बसे५ र उसे आजिविका स्रों से अपने की भावना से नारी कउधान के कल्याणसहोल (1) झूलनर: भूमिका उ चाकू: ५०17 जीवन यापन की राह स्वर्णिभविष्य मैगेयी ने समय के बदलाव के विषय में अपने सभ उपन्यासों में लिखा है किन्तु “सुनोमालिक सुने भूमिका में स्वयं का वक्तव्ये इस प्रकार प्रस्तुत “ हमारे समाज में आज भी रामचरित मानसे आदर्श चलाए जाते हैं भारत सम भाई, लक्ष्मान जैसा आझाकर राम जैसा भर्यादा पुरुष, सीता जैसी कुल वघु भयोध्या का रामराज्य बेशक ये आदर्भ भारतीय परिवार को बेशक पुराता करने के लिए स्तम्भ रूप है लेकिन व्यक्ति का जीवन राम चरित मानस की चौपाई भर नहीं है और न मनु स्मृति के श्लोक और न आर्य समाजी मन्त्रों का रूप 1”१रामय समाज और जीने का अन्दाज भले ही*

*आधुनिक माहौल में बदल गया, मगर परम्पराऐं नहीं हैं जो हमारी काकी नानियों बूढ़ीयो बडी बुढ़ियों के समय यी | आधुनिकता भलेही उन्हें नया जामा पहना दिया हो, मगर उनके अंदर की असलियत किसी से छिपी नहीं है।“2 आधुनिक युग में अर्ज के आये बदलाव में रघुराय का कथन हाख्य है। “क्यों कि उनका अहंकार उनकी पत्नी ने तोड़ा है। उनके द्वारा त्याग दिये जाने के बाद भी उनकी पत्नी रोई घई नहीं घिधियाही मी बल्कि उसने बच्चों को अच्छे ढंग से पाला और सास ससुर की देखभाल की और यह सब करते हुए उसने अपने ग्यो कार्य क्षेत्र में पति से कई गुना अधिक ख्याति अर्जित की गन्दी राजनीति नेस्सी की अस्मिता को सूली पर होगे रखा है, भोगावा की वस्तुमान रखा है। स्त्री जीवन उद्देश्य से हम भटक रहे हैं उसकी मनस्थति को नहीं स्त्री की अस्मिता लड़ाई स्त्री को मनुष्य का दर्जा की लड़ाई है। अभी शुरू ही हुई है अगली यही इस लड़ाई की सुनो की भूमिका ‘ की यह समझदारहे दिलाने लड़ाई सडकृत ‘सुनोमालिक आधुनिकता: सं. राजकिशोर स्त्री परम्परा औ) छोड़कर, घर की रेहली लाघ कर काम के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है तथा अपने देश की आर्थिक स्थिति सुहरु करने में अपना वाञ्छनीय योगदान दिया है। नौकरियों में, प्रशासन, राजनीति, तकनीकी, विज्ञान औद्योगिकी, सेना में आगे बढचढ़कर त्याग करती है तथा आर्थिक विषमताओं से ग्रसित समाज में व्याप्त बेरोज़गार महिलाओं का साथ देती हैं। इस संदर्भ में विधाहर’ में मैडची की वक्तव्य स्पष्ट है। स्त्रियां अकसर ही खतरों से की कोशिस करती है। कलाकार/रचनाकार के रूप में भी पे यही बुचकर निकलने मानकर चलती है कि हमारा समाज किसी अप्रत्याशित सच्चाई को स्वीकार करना नहीं चाहेगा। जिन्दगी के फलक पर अपनी वास्तविकत में जब कभी अनहोना होता है तो उसे निश्चित ही मनुष्य द्वारा धरित नहीं भाग्य का किया मानलिया जाता है, जिस पर न कोई एतराज हो सकता है और ने उसे किसी मानकीय तर्क की कसौटी पर सत्य प्रकार और ईश्वर कसा जासकता है।आजे आज के बदलते परिवेश में नारियों की स्थिति चुनौतियों का सामना करना एक प्रबल समस्या है जिसका हल ढूढना स्त्री की विवशता है किन्तु आज महिला शिक्षा के कारण विसंगतियों से 8 जूझना तथा उनका निवारण करना सीख गई है तथा अपने परिवार का पालन पोषण करती हुई दिखाई देती है। लेखिकानारी पात्रों*

*ने “त्रिया हठ” की मीरा व उपश जैसी नारी को जीवन बदलाव व स्मिता के द्वारा परिस्थितियों उद्‌घाटन करवाना मैत्रेयी की पुरानी लेखनकला कहसके जो आधुनिक युग में महिला सशकिकरण” कर एक ज्वल उदाहरन है देवेश कहता है” स्मिता, मैं अब तक यही समझता कि लड़के पढ़-लिखकर सरकारी या प्राइवेट नौकरी करते हैं अ लड़कियाँ पढ़-लिखकर किसानों को नहीं, नौकरी पेशा लोगों को व्यास जाती है, यही पढ़ने-लिखने का उद्देश्य भी है।“१ मीरा जैसी आदर्श संघर्षशील नारी के व्यक्तिय अशु क के माध्यम से स्वयं के संघर्षशील जीवन को घटित घटनाऊ की स्मरण करते हुए करती है। दादी ने रामायण की मिसाल की देखलो सीता जी ने सोने का हिरन मांगा तो भगवान राम ★ अपना धनुष-बाण लेकर तुरंत चल पड़े। वो तो सीता ही लक्ष्मण रेखा लांघ गई थी, सो सोने का हिरणं राक्षस मारीच बन गया और सीता को सोने का हिरण कमी नहीं मिला ।नौकरी पेशा*

*स्त्री और अर्थ व्यवस्था : पतउत मैत्रेयी पुच्चा ने ग्रामीण अंचल में व्याप्त आर्थिक विषमता से भक्त एवम् अशिक्षा के कारण स्त्री जाति के जीवन में व्याप्त संघर्षों एवम उनके निदान हेत सभी उपन्यासों में यंत्र-तंत्र विचार व्यक्त किये हैं। स्त्रीविमझ की चर्चा तिरस्कार अपमान और उपेक्षा से पीडित शीलो, कस्तूरी, करमबाई, अल्मा, मदा कुसुमा तथा अन्य महिला पात्रों की पारिवारिक समस्याऐं इतनी अधिक हैं कि उनकी समस्याओं से जूझती रहती हैं फिर भी परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कहीं न कहीं से चमार्जन देते नौकरी या अन्य माध्यम से घनार्जन करना चाहती हैं जाति के पुरुषों की चोरी करना तथा महिलाओं से धुरेलू कार्यों 1 के साथ-साथ दारू बेचकर अपना घर चलाती है प्रयासों।*

*अगन पाखी’ की भुवन कंठी की महिलाओं की स्थिति उनको अपने मर्दों से तक मिलने की अनुमती नहीं मिलती है। “ आम सी जवान छातियां लम्बी बेल सा लहराता लम्याउदा पुराने घाघरे का गेहुआ बनाकर छाती से भींचकर सोजाती 19 “कदम बाई की कश्वरी बने रहने के सिवा कोई इच्छा नहीं रु बेचना, चोरी करना, बार-बार जेल जाना, कबूतरा जगत की उरेबार है। 2 खराल खुरिया का मांस खाकर जिन्दगी जीने वाले 13 कबूतरा जाति की महिला अपने कारोबार के प्रति इतनी ईमानदार होती है कि मालबताने की स्थ मिटने विना अच्छा मानती है कदम बाई राणा से कटत भैंस खोलने का इनर सीख सगाई सम्बंध वाले कलाकारी सुनकर रूपते हैं। ‘इदनगम्’ की बऊ नौकरी महिला पात्र है”लूटर में जाऐ को अस्पताल, जिसस के उद्‌घाटन को लेकर देंगे होजाऐं किसी की वह है जो कहती मौत होजाए गांव के लिए अशुभ माना*

*जाता है। 4 मैत्रेयी ने श्यामली गांव को गांधी युग की पहचान के रूप में चित्रित किया है, शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिए सरकार द्वारा किये गये यासों तथा उनसे मिलने वाली महिलाओं को शिक्षा, रोजगार अवसरों की चचा की है तथा महिला विकास सम भा व की हिमायत की है। कथाकार ने अवचा के माध्यम से भीलों की पीड़ा का बयान किया है”हम भील की जात! शिकार के धनी माने जाते थे ब्याह बारात में बड़ी रौनक लगती थी हम औरों सम 111. अल्माकबू सरकार ने जंगलन से काढ़ के कुत्तों की डर के कश अहादुरी बहादुरी सब घर दी एक कनाऐं | अब तो मेहनत मशक्कत के बाद भी भूखे के मूंखें “” मैत्रेयी ने सारंग मैत्रेयी जैसी महिलाओं की विचारधारा को भी कर आधुनिक नारी जनित विडम्बनाओं की गाथा माना जो रेशम को कठोर बताकर महिला जाति को सशक्त की बात कहती है। अतरपुर ग्राम योजना लागू होती है करने स्कूल की इमारत की मह*

*को इन परिवर्तनों से आजादी मिली कारक रहे हैं पहली बात है उनका होना। इससे उनमें स्वयम आत्म निर्णय और गर्म निरोधकों के आने से स्वतन्त्र एवम निश्चित ढंग से आत्मविश्वास आया है। “यौवन वर्जनाओं से मुक्ति यौन रिश्खों को जी पाने की क्षमता | अस्त्रियां अपने जीवन को जी पाने की क्षमता अब स्त्रियां अपने जीवन-यापन के लिए. या यौन सुख के लिए किसी एक पुरुष पर निर्भर रहने की मज़बूर नहीं रह गयी है।“१ की है।‌उसके पीछे दो मुख्य 1 रूप से आत्म निर्भर करपाने का स्त्रियों का मजूरी होती है,*

*स्वयं मैत्रेयी परम्परा श्री पालना, स्त्री शक्ति का महत्व, समाज में उसकी ने भारतीय संस्कृति प्रतिष्ठा, नवीनता, प्रबलता का समावेश ख लेखनी के 11 माध्यम से नौकरी पेशा महिलाओं की संघर्षमय गांधा के प्रस्तुत कर उसकी आर्थिक विषमता ग्रस्व ग्रस्त जीवन की बुनियार पर समाज की की बिलडिंगे स्थापित पुष्पा सांस्कृतिक सरोकार जयी पुरुषों ग्रामीण नारी और सांस्कृतिक सरोकार मैत्रेयी ने भारत की पवित्र भूमि के अंचल में जन्म लिया है तथा भारतीय संस्कृति की अध्ययन किया है तथा उन्हीं सन्दमों गंभी उकेरने का प्रयास अपनी लेखनी के माध्यम से किया है। मुकेलखण्ड की लोक कथाओं, नाट्यरंग, लोक संस्कृति, लोक विश्वासों के आधार पर . कृतियों में स्पष्ट कई मापदण्डों की समन्वयात्मक स्वरूप जैसी शैली की लोक विद्या के अंशो को भी कर उपन्यास में देख सकते हैं।*

*पुढचा ने एक महिला ला रूप में हिन्दी साहित्य में पदार्पण कर अचेलिकता कायदेश अपने उपन्यास प्रस्तुत किया तथा ‘स्त्री निर्मार्थ की एक निशा झुकी है ‘झूलान्ट’ की शीलो एक ऐसी प्रतिनिधि पा पति व देवर दोनों के बीच झझूला बनती हैवह किसे छोड़े पति जोप्र वाली है और शहर में दूसरी औरत के साथ रहता है आराम देवर को जो उसकी भुगन को तृष्ट करता है वह है” अग्ग 1.2001 एक बेटा का पीछभोयीछोडू नके दोनों का ५ भन्दाजपत करको को सेतु बन्छ रामेश्वर को वर्णन सुनाती है। बांचा संत नीलनल नागर राम कृयो जसु भटाउ उजागर बच्चें सेतु अति सुदृढ़ बनना देखि कृपा निधि के मन भाव*

*ग्रामीठाक नारियों में संयुक्त परिवारों के पालन*

*पति-पत्नी, स्त्री पुरुष, बडे छोटे के सम्बन्ध एवम सर की प्रति प्रष्टि खुली खिड़किया’ विमर्थ’ को लेकर ग्रामीण अल्मा रुबूतरी ‘ इंग्लानर’ इनम सुनोमालिक सुनने आदि के माध्यम स्त्रो व उससे जुड़े से ख सरकारों की की गाया ‘अल्मा कबूतरी’ को देखे “ लाज छोड़कर कहती हूँ, मा० उसकी जुनानी तड़पती है। गुली (गोश्त) रांधकर गेहूं की रोटी बनाए बैठी रही कदम, बॅरी लोटा ही नहीं। महली रही तड़पत रही 1”9 गुणत के माध्यम से मैजेखी ने जश्नों का खुलेआम वर्णन किया है “काकी, डरों पर जश्न हुआ। लोगों ने खूब मरी दिया वे सब तीली कीचड़ में लोटने लगे (210) की जय-जयकार मैं रखा माता’ कह रहे हैं। पर करूँ मुझे सारी कीचड़ लाल – खून और मासक चोखर | कबूतरा जाति के संस्कारों को सी लेखिका ने अल्लो करी’ उपन्यास के माध्य से विचारोकि प्रस्तुत की अपने*

*“ धन्ये कार गठशाला की संस्कार डालकर अपने*

*से हाथ धोना है। देख नहीं रहे*

*राणा ने पड़ली, मुखिया के माथे पर जूता मार दिया, यह नहीं सोचा कि यहमार उसकी हो की कमर लोड डेंगी | रामा संह पढ़ गया, नो क्यो उसने दुनिया शर करली? कर लेता तो बेटी अब तक कुआरी न बनी रहती “3 अन्त में लेखिका ने ग्रामीण जीवन से जुड़ी समस्याओं, ग्रामीण, शहरी नारीजनित आकांक्षाओं दिनचर्याओं को स्वलेखनी के माध्यम से प्रकट किया और नारी पात्र की वस्तु स्थिति ल्या परिस्थतियों के कारणों को बताकर आधुनिक व पुरातन विचारधारा को संस्कारों से जोड़ कर आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा ही है 1. अल्मा कबूतरी प्*

*शहरी स्त्री और सांस्कृतिक सरोकार :---+यी एक ग्रामीण परिवेश में चली कड़ी हुई हगा एक सफल लेखिका बनी फिर उन्होंने शहरी संस्कृति में प्रवेश किया तथा ग्रामीण एवम् शहरी संस्कृति के परिवेश मुनौलिया पारिवारिक विघटन, प्रासदी, भय, कु, घुरन उरेले वैमनस्यता तथा पति- पली सम्बन्धों में होने वाले विरोध काही देखा है लेकिन ग्रामीण जीवन की अपेक्षा शहरी जीवन में इसका प्रभाव अधिक देखने को मिला ।“परिवार समाज की महत्वपूर्ण इकाई है वह इसलिए कि मर्द की मुखिया गिरि के लिए ऐसा पहला सिटोसन है जिस पर आसीन होते हुए उसकी ताजपोशी को मान्यता मिलती है। और इसका कमजोर होना या गिरना समाज के पहल खम्भे को गिराना है जो किसी तरह बर्दाश्त नहीं किया जाता। यदि एसा होता है तो स्खलन को जिम्मेदारखी ही मानी जाती है।“१*

*इसी सन्दर्भ में मैत्रेयी ने अपनी कहानियों में भी महिलाओं के सांस्कृतिक सरोकारों का उलया गया है, गोमा इसती है। की कहानियों के केन्द्र में है नारी और वह अपने सुख दुखो यत्राण्याओं और यातनाओं में तमकर अभी स्वतन पहचान भागरही है। उसका अपने प्रतिईमानदार होना ही बेण्ड है होनों है का वाम दिया जाता है। 2 नरेन्द्र द्वारा और भोलाराम जैसे पात्रों के माध्यम शहरी जीवन में व्याप्त समस्याओं से जूझती नारी की गाथा, संघर्ष शीलू समाज सरकारों के बोझ से लदी विषमता भोगती हुई नारी की आधनिक विचार धारा को उल्लखित किया है। जो पुरुष के दबाव से आज भी मुक्त नहीं है यह शिक्षित संस्कारवान का सुनोमालिक सुन्द्र पृ.वोने के बाद भी रूढ़ियों से बंधा है 2 गोमहंसती है, भूमिका पृष्ठ आवरण मे राजेउयादव कावळ तत सकार सारखी शहरी नारी भोग रही है यन्त्रणाओं धन की लालची प्रवृत्ति ने सारे रिश्तों झूठा बनादिया है। अगन पाखी’ के भुवने और मो. + के माध्यम से मैत्रेयी ने कथा को जबदस्त मोड़ दिया जातिगत विषमता यहां भी विद्यमान है।“ मैतरानी के के खाने के लिए एक बार नहीं सौ बार छिः कहूंगा । हम गुज हैं, मैतरों से इस गुना बड़ी जात के 119 बेटा हम इस बोलू रहे हैं क्या? वह अब हमारी बहू है, हमारे घर की मरणार समझो | मरजाद निमाना क्या होता है, तुमने तो अपनी माँ | बहन के लच्छिन उसे भी समझा दो। हम तो कहते है के लिए अपनी माँ को लिखा लाओ 12 कृष्णा सोबती देखा होगा एक दिन की जिदगीनामा” में भी नारी की 29.*

*“विषमता विषय में लिखा है) “गीता पढ़ कर की तुम ऐसी बातें करती हो चुनौती को स्वीकार करना तो कर्मयोगी का सबसे बड़ा धर्म है। 3 पीडित जिन्दगी केमैत्रेयी के समकालीन कथाकार गीतांजलि श्री ने (माई’ उपन्यास के माध्याम से ऐसी औरत की कही है जो घर के लिए सर्वस्व समर्पित करडेती है तथा धुरी बनकर पूरे दायित्वों का निर्वाह कष्ट सहते हुए करती है। राजी सेठ ने निखा मृडला गर्ग ने कठगुलाबू’ कोणारी विषयक प्रश्नों को नयी भूमि के रूप में प्रस्तावित करने के कारण उपन्यासों में विचारणी) बन पड़ा है। उपमास में अनेक स्त्रियाँ है जो अपने स्तर पर जीवन को जीने का उद्यम करती हैं।*

*शताब्दी का अंतिम दशक-अगर इसलिए याद किया जाये उसमें हिन्दी के महिला उपन्यास लेखने ने अपनी सम्पूर्ण कृष्ण ली है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी(*

*(घ)सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन के कारक तत्व:*

*संस्कृति की बात कहें तो मैडेयी भारतीय संस्कृति की परम्पराओं खढ्‌ियो लोककथाओं, लोकविश्वासों का*

*प्रयोग लग-भग सभी उपमासों में रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत किये । ,किन्तु इन सबकी मनोमूमि ग्रामीण अचल व बुन्देलखण्ड के आस-पास के क्षेत्रों में रहने वाली आदिवासी जातियों कोर, कबूतरा सांसी जाति के अलावा दलितोत्थान की बात भी कही है किन्तु आप की रचनाधर्मिता मूलतः स्त्रीविमर्थ को लेकर रही है चाहे वह शहरी नारी या ग्रामीण | जातिगत निर्णय से परे रहकर स्त्री मुक्ति हेतु किये नव्य, प्रयास अने अनुढे रहे हैं। यत्रतत्र इनके द्वारा रामायण’महाभारत’ वेद पुराणों दर्शनों पर कसे व्यंग्यों से इनका आलोचनात्मक • दृष्टिकोण मुखरित हुआ है किन्तु शोध करते समय मैने यह सोचा है कि यह लेखिका धारणा नहीं वह नियति ही है क्यों कि स्वयं स्त्री होकर स्त्री की तो पहले सोचेंगी*

*18 आज शवी शताब्दी में सांस्कृति मूल्यों को हास होता दिखाई रहा है जो हमें संस्कृति, भूगोल मानवमन से जुड़े विचारों एवम् विचार धाराओं में होंने वाले परिवर्तनों से स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। भारतीय संस्कृति की पृष्ठभूमि में लेखिका ने ग्रामीण परिवेश चुनौतियां, जीवनमूल्यों, घटित घटनाओं का आलेख प्रस्तुत कर भारत भूमिकी पवित्रता को प्रकट किया है।ॐ प Ch 4.11 दी है लिखने महर्षि पाराशर ज्योतिष ए ॐ सोपारा लेखिका ने स्वयं के जीवन घटित होने वाली घटनाओं को महाभारत ने सज्ञां भीतर मचे महाभारत के किन-किन दौरों से गुजरी है? किसके पडाव पर ठहरी हुँ। तेजी से बदलते थोखे आन्दोलन / आजाही के विकास की उपलब्धियाँ साथ ही गांव की प्रगति के आयामों को विसंगतियों में घोल देने की विपन्न मानसिकता के दुमुँह समाज में आज भी नारी वरतू मात्र / मात्र सम्पत्ति विनिमय की चीज काल के स्याह अंधेरों | के में भरकुती प्रासद जिन्दगी, दुख दहों की व्यथा कथा, जो उनकी ही नहीं कहीं मेरी अपनी भी हो गई ? जीवन मूल्य सभ्यता के चालीस वर्षों की तथाकथित रूढिग्रस्त हो प्रवृत्ति “‘झूलानट’ की शीलो मात्र को घराटल की पृष्ठभूमि पर उराठ तथा है किया है। से आनेवाले*

*की बखान हमारी संस्कृति स्कृति परिवर्तनों स्नेह दीनवा, सहयोग, परस्पर नेह की भावना की पाठ पढ़ाया जाता है किन्तु आज विपरीत परिणाम देखने को मिलते हैं। निधिक लोकाचारों, विरोधाभासी धर्माचारों का विखण्डन करती नारी देह की स्त्री स्वतन्त्रता की वकालात करती है, मैत्रेयी ने भुवन के माध्यम से सांस्कृतिक परिवर्तन मोहिनी द्वारा कचहरी में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने से बताया है। कचहरी से अर्ज है कि अपने पति की जायजाद का हक मुझे सौंपा होने वाली घटनाओं को महाभारत को संज्ञा दी है. भीतर मचे महाभारत के किन-किन जैसे से गुजरी पड़ाव पर ठहरी हुँ। तेजी से बदलते जीवनय धोखे आन्दोलन | आजादी के चालीस वर्षों / विकास की उपलब्धियाँ प्रगति के साथ ही गांव की आयामों को विसंगतियों में घोल देने*

*है? किस कि है सभ्यता के की तथाकथित रूढिग्रस्त रही। की प्रवृत्ति विपन्न मानसिकता के दुमुँह समाज में आज भी जारी करन मे मात्र / मात्र सम्पत्ति | विनिमय की चीज काल के स्याह अमेरी में भटकती प्रासद जिन्दगी, दुख रहों की व्यथा कथा, जोऊन ही नहीं कहीं मेरी अपनी भी हो ग ‘झूलानर’ की शीलो मात्र को सांस्कृति घराटल की पृष्ठभूमि पर उराठ तथा आनेवाले है की बखान किया है। हमारी संस्कृति में दीनवा, सहयोग, परस्परहनेह की भावना किन्तु आज विपरीत परिणाम देखने निधक लोकाचारों, विरोधाभासी करती नारी देह की मैत्रेयी ने भुवन के माध्यम २ मर्यारी शील स्नेट को पाठ पढ़ाया जाता को मिलते हैं। शीला धर्माचारों का विखण्डन स्त्री स्वतन्त्रता की वकालात करती से सांस्कृतिक परिवर्तन मोहिनी*

*द्वारा कुचहरी से अर्ज है कि ॐ. बेतवा बहती रही 2. अगलपाखी प्र०*

*है है, में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने से बताया है। कचहरी पति की जायजाद जाए मैं कुंवर अजय पर सख्त एतराज करती है | “2 अपने पृ. 6 का एक मुझे सौंपा सिंह की हकदारी*

*(ड)सांस्कृतिक परिवर्तन: पश्चिमी करण:----- यह तो निश्चित है कि सांस्कृतिक, भौगोलिक, सहाजितक एवम् मानवीय विचारों का परिवर्तन होना नियति व अनिवार्य भी है। आज की पीढ़ी हमारी परम्पराओं को दकियानुसी विचारों काक्रार देती है तथा पाश्वात्य की घेड में लगी रहती है। अपने पूर्वजों ने जो सस्कारों को दिये है उनको खिल्ली उडाई जाती है। लेकिन मैत्रेयी ने उन्हें अपने कथा साहित्य में इसलिए दिया है कि सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के धरातल पर बहुजातिय बहुचर्मी लोगों के साथ जीवन यापन कर भारतीय संस्कृति की परम्परा का निर्वाह किया है प्राचीन काल की नारी औध आज की नारी का सांस्कृतिक बोध अलग-अलग है तथा दोनों की विचारआए किया कलाप में भी आमूलचूल परिवर्तन हो रहा है तथा अपने अहं बेकारण भारतीय संस्कृति के परिवेश चुनौतियों का सामना करती सी डिखाई केली नारी की विडम्बना है जो पुरुषों के अत्याचारों से पीड़ित भोषित संक्रमजिव विचारों के बोझों से उमरती दिखाईदै मंदरा शीलो अल्मा, कदमबाई जैसी बहुत सी नारी पात्र हैं जिनकी वस्तुस्थिति को परख कर ही मैत्रेयी ने कथा सृजन किया है। आगे की युग विज्ञान तकनीकी की युग है यह सत्य है, किन्तु हम इनके पीछे अपने संस्कारों को तो नहीं भुला सकते कारों को तो नहीं भुला सकते है। समकालीन मासकार कृष्णा सोबती ने भी भारत भूमि पंजाब अँचल विशेष की परिहन इसे प्रकार बनी है जिससे पूरे भारत की पौराणिक, ऐतिहासिक एवं आधुणिक वातावरण में सायतका कारके से जो परिवर्तन आयी है वह अपन्यासकारों हनुभ अन्य ने भी प्रकट किया है।*

*मूल्य शब्द 20 वीं शताब्दी का कदाचित चर्चित है। आज वैचारिक क्रांतिकारी परिवर्तनशील वैचारिक युग में विवादास्प बनचुका है। मूल्य शब्द के अर्थ की बात सोचते हैं गे डाम’ य कीमत’ से है भूल्य शब्द संस्कृत की मूल धातु के साथ यत् प्र संयुक्त करदेने से बना है, जिसका अर्थ कीमत मजदूरी आदि होता है मूलेन 3 अर्थात् किसी वस्तु के बदले में मिलने वाली धन, कीमत महादेव के अनुसारभ के अनुसार भारतीय दर्शन में सामाजिक, नैतिक एवम् आध्यात्मिक मूल्यों की चर्चा करते समय इन्ही पुरुषार्थों को स्वीकार कर उन्हें नवीन नाम देने की चेष्टा काह से अर्थ (अर्थ) आनंद काम। धर्मचरण (धर्म) पूर्णता प्रया आध्यात्मिकता स्वतन्त्रता (मोक्ष) चार मूल्य स्वीकार करते हैं? देवी प्रसाद गुप्त में”हमारे महाकाव्यों उददेश्य धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष की अधीत धतुवर्ग की फल प्राप्ति माना गया है। इसमें प्रतिपादित भाखत जीवन मूल्य भोग, राजयोगे और कम है।“ 4 जीवन मूल्य में शारीरिक संरचना. मूल प्रवृत्तियो, सबैग, प्रेरणा, अनुभूतियों, अभिवृत्तियां, और तक आदि प्रमुख माने हैं। सामाजिक परिवर्तन मूल्य दौर में नारी की भूमिका ने कई मोड लिये है। आत्मनिर्भरता के वातावरण में बारी भले ही सहपाती है। कि उसके परंख गये हैं लेकिन सामाजिक नीतियों मानसिक ग्रन्थियों से ची जूमने के प्रयत्न में ही उसके पैने मी दूगये। कभी उसे शरीर की सांग झुका देवी है तो कभी अकेलेपन की पावना के इस खुल मोड लिये है आलनिरिता लेय त 5हिन्दी महा: सिद्धान्त और एकडुनिया समानान्तर : सं० राजेन्द्र यादव पृ.36. , देवी: यौन मुक्तता को ही नारी स्वातंत्र्य (की सीमा समझने वाली आधुनिक नारियों के नाध्यम यम से परम्परागत विवाह सम्बन्धों की उपेक्षा तथा मातृत्व मूल्य विघटन का अंकन आ है। मैडेयी ने साहित्य में शत व्यक्ति की मूल्य-दृष्टि मुख्य रूप से अर्थ और संस्कृति व राजनीति के केन्द्र पर रखी है*

*निष्कर्ष। । इस नये माने को नापने के लिए या ले पुराने पैमानों को तराशना होगा*

*जो उन्हें बदलना होगा।स्थानीय रंगों की घंटाऐं कथा साहित्य में चार बर्बाद लगाकर मैडोधी को एक सफल लेखिका होने गौरव दर्शाती है। चारों वर्षों के जातिगत आचार-व्यवहार का उल्लेख हष्व्य है” गहने जेवर मर्दों के कलेजे में चले जाते हैं, और तों के हाथ तुलसी को कष्ठी रहगाती है। रसोई की छत पाक और ठाकुर जी की पूजी पाठ ही उनकी पूंजी है, हर समय कच्चा पक्का चौका यही की लकीर्तन है।12 लोकनाट्य से स्वीका ‘जुड़ाव फागों की पहचान है। उस्तूरी कुण्डल बसे, अंगनपारखी के माध्यम से मूल्यों की वास्तविक पहचान को प्रस्तुत कि भूमजलीकरण के दौर में नारी को समस्थार ( मैत्रेयी पुहुॅचा ने साहित्य सृजन में स्त्री विमर्भ मुख्य रखा है चाहे बेलवा बहती रही झूलानर और चाहे विमाछ’ हो उस कस्तुरी कुछल बसे, अगनपा सभी उपन्यासों का मूह आ स्त्री की पीडा भोगती पथछि स्थिति को उजागर कर उ अधिकार के लिए जगाना है। आपने ग्रामीण संस्कृति बुन्देलखण्ड व उसके आस-पास के परिवेश में पले- भील, आ नर, कबूतरा आदि जातियों की रोजगार समस्या, स्त्री पुरुष १ भेद, कानून की जर्जर व्यवस्था की खुलती पोल को उत्तर किया है। साथ ही संयुपरिवारों में होने वाले विघटन एवम् रिश्तों की को देखा परखा तलिखा टूहै। स्नीत रेशम और सारंग परस्पर कहते हैं” कल्ल रेशम का नहीं मेरा हुआ है सारंग। कमीनों ने मुझे चीरडालो झूलानट में बालकिशन देवी के मंदिर में छुर्द गाता है। एक -एक छड रहा हुआ है। उसकी दुर्बल काया कराहने लगी “2 शीलो तथा अम्मा का प्रेम ही प्रस्तुत किया है। “शादी के बाद प्रारंभ में भीलो व अम्मा एक ही बाली में खाना खाती अम्मा मोरे ठाकुर मेहर तुम्हारी कर कहकर महादेव का नहीं शीली भाभी का गुणगान कर्ती थी।“3 इसी नये नये फागे की रचना करते है तथा जो उनफागों का भरम समझने में माहिर होती जा रही थी। वह हद ,शब्द, भाव ओ बयान को अरबाने लगी। ईईसरी चकित से रह जाते हैं. वह फर्जि से फाऊ मिलाकर कहती है।: रिमैत्रेय के सांस्कृतिकल का समग्र अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्ष रूप से स्वम् आर्थिक सरोकार कह सकते है के ग्रामीका एवम शहरी जीवन की आर्थिक स्थितियों एवम उनके कारण किये गये सूघर्षों की आलोच नात्मक अध्ययन किया है तथा बदलाव आने वाले उसूलों को उजागर किया है. आज की भागम-भाग में आज की बारी की विषमता ग्रस्त जीवन चर्चा को आपने स उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत किया है।ग्रामीण एवम शहरी महिला की पीड़ित गृहस्थी, सांस्कृतिक सरोकार एवम पश्चिमीकरण द्वारा आये बदलाव, जीवनमूल्यों की संक्रमण, विघटन बदलाव एवं उन्होने वाली क्रांतिकारी विचारधाराओं के माध्यम से भ्रमण्डली कुरण के दौर में नारी की उर्दभरी गांधी को उजागर किया है*

***संदर्भ ग्रंथ सूची***

*१बेतवा बहती ‌रही१०*

*२वही १४*

*३वही २२*

*४चाक् ११*

*५ वहु १२*

*६सुनो मालिक आवरण पृष्ठ लेखिका का‌ वकतव्य*

*७सुनो मालिट‌सुनो४९*

*८झूलानट भूमिका‌से उदधृत*

*९कसतुरी कुंडली बसै१२*

*१०चाक१७*

*११ स्त्री परम्परा और आधुनिकता सं‌‌राजकिशोर*

*१२ वही‌३८*

*१३ तिरिया हठ‌ भूमिका पृ५*

*१४वही १४५*

*१५ वही १०५*

*१६अलमा कबूतरी ४*

*७ वही‌३७*

*८ वह ३८*

*१८ इदननमम २३*

*१९ झुलानट ११५*

*२० गोमा‌हंसति‌है आवरण पृष्ठ पर राजेंद्र यादव का‌ ‌वकतवय*

*२१आंगन पाखी ३०*